BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

प्रधानमंत्री की नीदरलैंड की आधिकारिक यात्रा

ऊर्जा, तकनीक और रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा

21 मई 2026

हाल के वर्षों में भारत और नीदरलैंड के द्विपक्षीय संबंधों में अभूतपूर्व मजबूती आई है। दोनों देशों के बीच सहयोग का दायरा अब पारंपरिक क्षेत्रों से आगे निकलकर उभरते और रणनीतिक क्षेत्रों तक विस्तृत हो चुका है। मई 2026 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र की नीदरलैंड यात्रा ने सेमीकंडक्टर, ऊर्जा सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, नवाचार और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में आपसी साझेदारी को एक नई गति प्रदान की है। यह यात्रा सतत विकास, आर्थिक मजबूती और भविष्योन्मुखी सहयोग के प्रति दोनों राष्ट्रों की साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। साथ ही, इसने एक सुदृढ़ और दूरदर्शी साझेदारी के संकल्प को और अधिक बल दिया है।

उभरती वैश्विक व्यवस्था में भारत-नीदरलैंड संबंध

वर्ष 1947 में राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद से ही भारत और नीदरलैंड एक मजबूत और निरंतर विस्तार लेती साझेदारी साझा करते आ रहे हैं। पिछले कुछ दशकों में, दोनों देशों के बीच सहयोग का दायरा व्यापार, निवेश, जल प्रबंधन, कृषि, स्वास्थ्य और नवाचार जैसे क्षेत्रों में काफी विस्तृत हुआ है। आज की उभरती वैश्विक व्यवस्था में, नियमित उच्च स्तरीय यात्राओं और संवादों ने द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूती दी है। इसके साथ ही, इन्होंने गहरे आर्थिक और तकनीकी सहयोग को भी एक नई गति प्रदान की है। अब दोनों देश सेमीकंडक्टर, नवीकरणीय ऊर्जा, मैरीटाइम टेक्नोलॉजी, रक्षा, शिक्षा और डिजिटल नवाचार के क्षेत्रों में मिलकर काम कर रहे हैं। यह साझेदारी सतत विकास, वैश्विक सप्लाई चेन की मजबूती और नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय सहयोग को भी बढ़ावा देती है। लोगों के बीच मजबूत आपसी संबंध और बढ़ते व्यावसायिक जुड़ाव ने द्विपक्षीय रिश्तों को और अधिक प्रगाढ़ किया है। मई 2026 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की नीदरलैंड यात्रा ने इस भविष्योन्मुखी साझेदारी के साथ-साथ यूरोप के साथ भारत के जुड़ाव को और अधिक सुदृढ़ बनाया है।

भारत-नीदरलैंड: नवाचार, व्यापार और सतत विकास को बढ़ावा

भारत-नीदरलैंड साझेदारी मजबूत ऐतिहासिक संबंधों और लगातार बढ़ते रणनीतिक सहयोग की ठोस नींव पर टिकी है। यह साझेदारी अत्याधुनिक तकनीकों में नीदरलैंड की विशेषज्ञता को भारत के

व्यापक स्तर और इन्नोवेशन इकोसिस्टम के साथ जोड़ती है। वर्तमान में दोनों देशों के बीच सेमीकंडक्टर, ग्रीन हाइड्रोजन, मैरीटाइम टेक्नोलॉजी और स्किल्ड मोबिलिटी जैसे क्षेत्रों में सहयोग तेजी से बढ़ रहा है। यह साझेदारी ग्लोबल गवर्नेंस, आर्थिक हितों और सतत विकास के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह दोनों राष्ट्रों के साझा आर्थिक हितों, तकनीकी सहयोग और समान वैश्विक आकांक्षाओं को दर्शाती है।

रणनीतिक एवं भू-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य: आज नीदरलैंड भारत को केवल एक बाजार के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में देखता है। अत्याधुनिक तकनीकों से समृद्ध डच इकोसिस्टम और भारत के व्यापक स्तर पर क्रियान्वयन की क्षमता–दोनों मिलकर 'नवाचार और व्यापकता के संगम' की एक नई साझेदारी को परिभाषित करते हैं। इसका सबसे जीवंत और प्रत्यक्ष प्रमाण सेमीकंडक्टर, जल प्रबंधन, हाइड्रोजन और मैरीटाइम टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

व्यापार, निवेश और ईयू एफटीए गेटवे: नीदरलैंड यूरोप में भारत के सबसे बड़े व्यापारिक स्थलों में से एक है, जिसके साथ द्विपक्षीय व्यापार 27.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2024-25) का है। यह 55.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर के संचयी एफडीआई के साथ भारत में चौथा सबसे बड़ा निवेशक है। नीदरलैंड के साथ कुल वस्तु व्यापार, भारत के कुल वस्तु व्यापार का 2.46 प्रतिशत है। नीदरलैंड के साथ भारत का व्यापार अधिशेष 17.393 बिलियन अमेरिकी डॉलर (144,095 करोड़ रुपये) है।

भारत में 300 से अधिक डच कंपनियां और नीदरलैंड में 300 से अधिक भारतीय कंपनियां मौजूद हैं। नीदरलैंड्स इंडिया चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड ट्रेड (एनआईसीसीटी) और 'इंडियन बिजनेस चैंबर' (आईबीसी) जैसे संगठन दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देते हैं।

सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में सहयोग: वर्ष 2024 में, भारत और नीदरलैंड ने कौशल विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहयोगात्मक अनुसंधान एवं विकास और इस क्षेत्र में स्टार्टअप्स तथा उद्यमिता को बढ़ावा देकर भारत के सेमीकंडक्टर क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए एक साझेदारी की।

ऊर्जा सुरक्षा और स्वच्छ ऊर्जा: भारत और नीदरलैंड जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और अनुकूलन के लिए अपने संयुक्त लक्ष्यों को बढ़ाने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। दोनों देश हितधारकों को जोड़ने, ज्ञान को साझा करने, प्रौद्योगिकी के सह-विकास, सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों के आदान-प्रदान, एंड-टू-एंड (शुरुआत से अंत तक) बुनियादी ढांचे के विकास और परिचालन सुरक्षा पर मिलकर काम कर रहे हैं। सहयोग के प्रमुख क्षेत्र ग्रीन हाइड्रोजन के उपयोग को बढ़ावा देना और ग्रीन पोर्ट्स का विकास करना हैं।

सुलभ आवाजाही, प्रवास और पर्यटन: यूरोप में भारतीय मूल के लोगों की दूसरी सबसे बड़ी आबादी नीदरलैंड में है (जो केवल यूके के बाद है)। यहाँ लगभग 2,40,000 भारतीय प्रवासी रहते हैं, जिनमें लगभग 2,00,000 हिंदुस्तानी-सुरीनामी समुदाय के सदस्य शामिल हैं जो डच

समाज में पूरी तरह से रच-बस गए हैं। दोनों पक्ष प्रवासन और आवागमन को सुगम बनाने के लिए काम कर रहे हैं।

भारत-नीदरलैंड साझेदारी मजबूत ऐतिहासिक संबंधों से विकसित होकर एक भविष्योन्मुखी रणनीतिक सहयोग में बदल गई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की यात्रा ने इस व्यापक साझेदारी को और गहरा करने तथा एक तेजी से बढ़ते बहुध्रुवीय विश्व में यूरोप के साथ भारत के जुड़ाव को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम दर्ज किया है।

द्विपक्षीय व्यापार और प्रौद्योगिकी साझेदारी के विस्तार के लिए प्रधानमंत्री की यात्रा

भारत के प्रधानमंत्री और नीदरलैंड के महामहिम किंग विलेम-अलेक्जेंडर और क्वीन मैक्सिमा ने लोगों के बीच आपसी संबंधों और शिक्षा, नवाचार, सेमीकंडक्टर, डिजिटल तकनीक, जल प्रबंधन तथा ग्रीन पार्टनरशिप के क्षेत्र में सहयोग पर ध्यान केंद्रित करते हुए, भारत-नीदरलैंड संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा की।

उन्होंने हाल के वर्षों में इन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में हुई महत्वपूर्ण प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और नीदरलैंड के प्रधानमंत्री महामहिम श्री रॉब जेटन ने भी दोनों देशों के बीच बढ़ती गतिशीलता और रणनीतिक तालमेल को स्वीकार किया। द्विपक्षीय सहयोग के बढ़ते दायरे को देखते हुए, दोनों नेताओं ने **वर्ष 2026-2030 की अवधि के लिए भारत-नीदरलैंड संबंधों को एक "रणनीतिक साझेदारी" के रूप में उन्नत करने का निर्णय** लिया। यह साझेदारी नियमित उच्च स्तरीय नीतिगत वार्ताओं और आपसी हित के विभिन्न क्षेत्रों में गहरे सहयोग पर ध्यान केंद्रित करेगी।

दोनों पक्ष आर्थिक और निवेश संबंधों को मजबूत करने पर सहमत हुए, जिसके तहत

- द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देना
- बाजार तक पहुंच में सुधार करना
- एसएमई (लघु एवं मध्यम उद्योगों) की भागीदारी को प्रोत्साहित करना
- निवेश को सुगम बनाना
- मजबूत मूल्य श्रृंखलाओं का निर्माण करना,

इसके अतिरिक्त, बढ़ते सहयोग का विस्तार इन क्षेत्रों तक होगा:

- जल, कृषि और स्वास्थ्य
- उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ
- नवाचार, विज्ञान और शिक्षा
- ऊर्जा परिवर्तन और सतत विकास
- समुद्री मामले
- रक्षा और सुरक्षा सहयोग
- प्रवासन और आवागमन तथा
- सांस्कृतिक और आपसी जन-संपर्क आदान-प्रदान

प्रधानमंत्री की इस यात्रा ने साझा वैश्विक चुनौतियों से निपटने और सतत विकास को आगे बढ़ाने में गहरे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व को फिर से रेखांकित किया। इसने नवाचार, आर्थिक मजबूती और नियमों पर आधारित वैश्विक सहयोग को मजबूत करने में रणनीतिक साझेदारियों की बढ़ती भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

द्विपक्षीय चर्चा के प्रमुख परिणाम

प्रधानमंत्री की यात्रा के परिणाम भारत-नीदरलैंड संबंधों के गहराने और रणनीतिक क्षेत्रों में दीर्घकालिक व मजबूत सहयोग की बढ़ती संभावनाओं को दर्शाते हैं। ये परिणाम मजबूत द्विपक्षीय और बहुपक्षीय जुड़ाव के माध्यम से ग्लोबल गवर्नेंस को मजबूत करने, सतत विकास को आगे बढ़ाने, नवाचार-आधारित विकास को बढ़ावा देने और उभरती हुई वैश्विक चुनौतियों पर सहयोग बढ़ाने की साझा प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करते हैं।

परिणाम 1: भारत-नीदरलैंड रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर

यह रणनीतिक साझेदारी दोनों देशों के संबंधों को और मजबूत करेगी और 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण के अनुरूप मजबूत आर्थिक विकास को गति देगी। यह भारत में रोजगार के बेहतर अवसर पैदा करने के साथ-साथ द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देगी। यह सहयोग शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को भी मजबूत करेगा, जिससे नवाचार और उच्च अनुसंधान परिणामों को बढ़ावा मिलेगा। इसके अतिरिक्त, इसमें भारत के सुरक्षा और विकास लक्ष्यों के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र भी शामिल हैं।

परिणाम 2: भारत सरकार को चोल कालीन ताम्रपत्रों की वापसी

11वीं शताब्दी के चोल कालीन ताम्रपत्रों की भारत वापसी एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पड़ाव के रूप में दर्ज हुई। ये ताम्रपत्र चोल राजाओं द्वारा जारी किए गए शाही घोषणापत्र हैं, जिन पर तमिल और संस्कृत भाषा में शिलालेख उत्कीर्ण हैं। इनमें तमिलनाडु के नागापट्टिनम में एक बौद्ध विहार को 'अनैमंगलम' गांव दान में दिए जाने का विवरण दर्ज है। इनकी वापसी भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के गहन अनुसंधान और सराहना को बढ़ावा देगी।

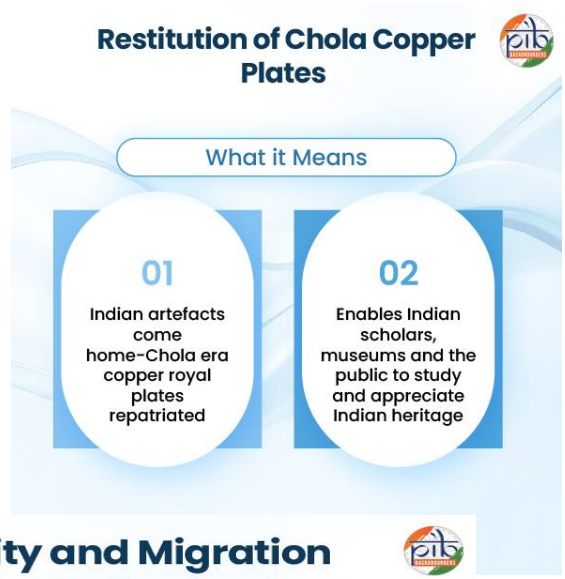

परिणाम 3: प्रवासी सहयोग को मजबूत करना

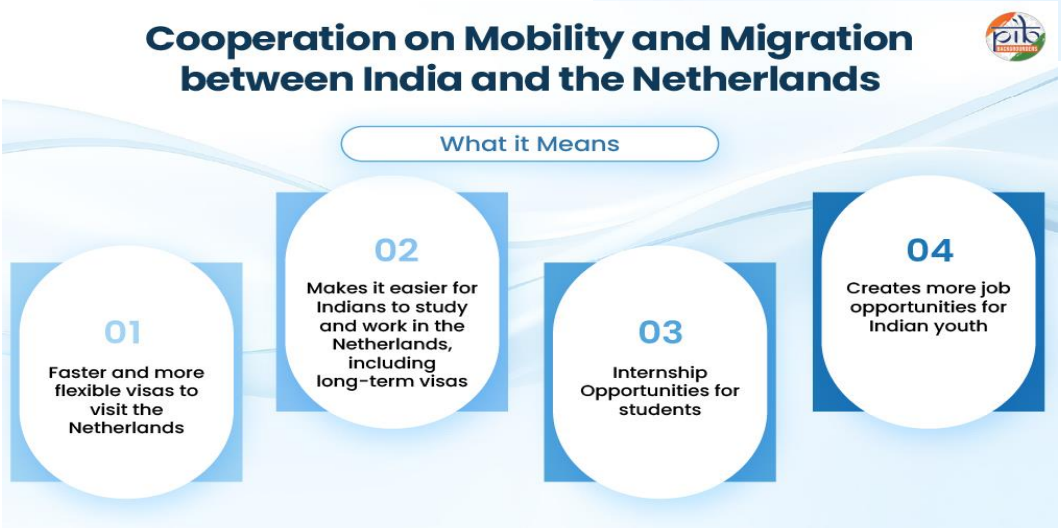

मजबूत आवागमन और प्रवासी सहयोग से भारत और नीदरलैंड के बीच आना-जाना अधिक आसान और सुलभ हो जाएगा। भारतीय छात्रों को शैक्षणिक, अनुसंधान और इंटर्नशिप के बेहतर अवसर मिलेंगे। कुशल पेशेवरों को तेज और अधिक मजबूत वीज़ा प्रक्रिया का लाभ मिलेगा। यह साझेदारी भारतीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी पैदा करेगी। ये उपाय दोनों देशों के लोगों के आपसी संबंधों को और गहरा करेंगे तथा मजबूत शैक्षिक एवं व्यावसायिक सहयोग को बढ़ावा देंगे।

परिणाम 4: टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और एएसएमएल के बीच सहयोग

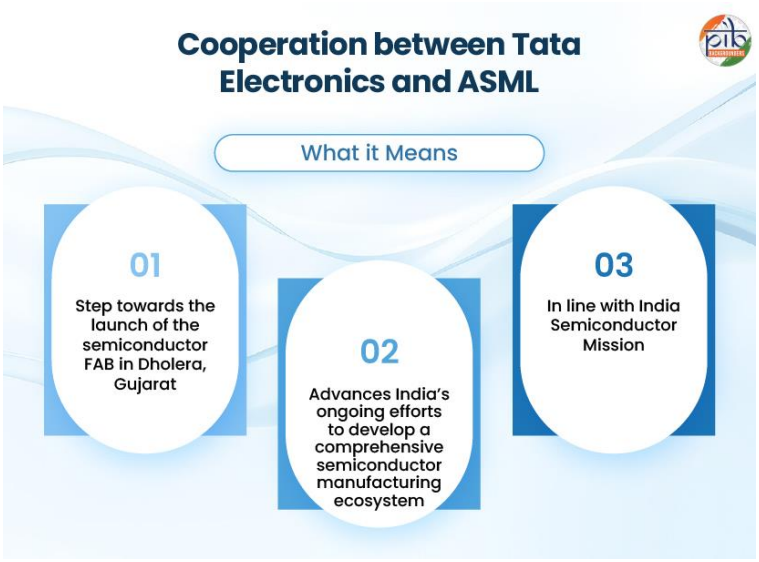

सेमीकंडक्टर क्षेत्र में यह सहयोग भारत की महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। यह गुजरात के धोलेरा में एक सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन सुविधा के विकास में सहायता प्रदान करेगा। यह साझेदारी वैश्विक सेमीकंडक्टर मूल्य श्रृंखला में भारत की स्थिति को मजबूत करेगी और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देगी। यह 'इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन' (आईएसएम) के उद्देश्यों के भी अनुकूल है और भारत में उन्नत विनिर्माण क्षमताओं के विकास का समर्थन करती है।

परिणाम 5: क्रिटिकल मिनरल्स के क्षेत्र में सहयोग

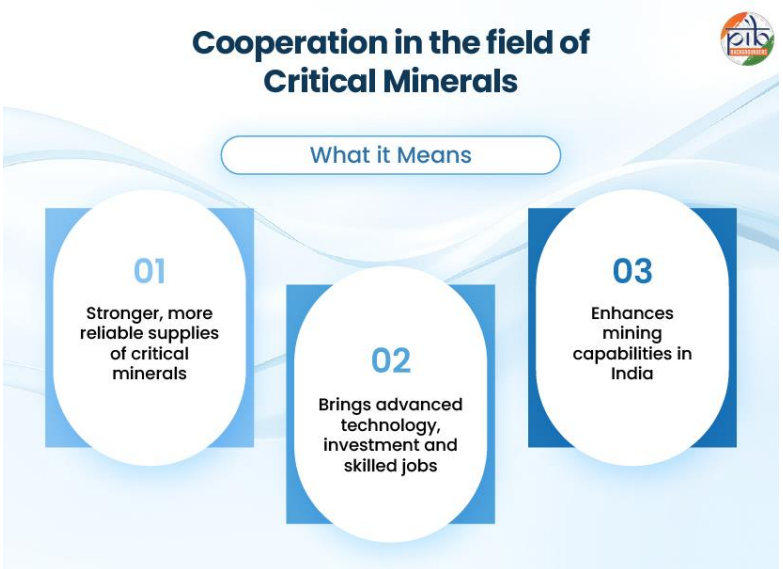

क्रिटिकल मिनरल्स के क्षेत्र में यह सहयोग आवश्यक संसाधनों के लिए विश्वसनीय सप्लाई चेन को मजबूत करेगा। यह भारत की स्वच्छ ऊर्जा और उन्नत विनिर्माण की महत्वाकांक्षाओं को सहायता प्रदान करेगा। यह साझेदारी उन्नत तकनीकों, निवेश और कुशल रोजगार के अवसरों को भी देश में लाएगी। इससे स्ट्रैटेजिक मिनरल्स के क्षेत्र में भारत की खनन और प्रसंस्करण क्षमताओं में वृद्धि होने की उम्मीद है।

परिणाम 6: गुजरात की कल्पसर परियोजना में नीदरलैंड के साथ तकनीकी सहयोग

भारत में जल से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए डच विशेषज्ञों के अनुभव के साथ 'रणनीतिक जल साझेदारी' को मजबूत किया जाएगा। इसका उद्देश्य घरेलू और कृषि उपयोग के लिए स्वच्छ पानी की उपलब्धता में सुधार करना है, जिससे जीवन स्तर बेहतर होगा। कल्पसर परियोजना के तहत खंभात की खाड़ी में एक मीठे पानी के जलाशय के निर्माण का प्रस्ताव है, जो ज्वारीय ऊर्जा, सिंचाई और परिवहन संपर्कों से लैस होगा। यह सहयोग सतत जल प्रबंधन और बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे के विकास को भी सहायता प्रदान करेगा।

परिणाम 7: ग्रीन हाइड्रोजन पर रोडमैप

भारत-नीदरलैंड ग्रीन हाइड्रोजन रोडमैप से नवीकरणीय ऊर्जा और निवेश के क्षेत्र में सहयोग मजबूत होगा। यह ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन, उपयोग और निर्यात में भारत के लक्ष्यों को सहायता प्रदान

करेगा। यह पहल दोनों देशों में स्वच्छ ऊर्जा स्रोत के रूप में ग्रीन हाइड्रोजन को तेजी से अपनाने को बढ़ावा देती है। इससे नए बाजार बनने, निवेश आकर्षित होने, रोजगार के अवसर पैदा होने और स्वच्छ ईंधन की दिशा में भारत के बदलाव को गति मिलने की उम्मीद है।

परिणाम 8: नवीकरणीय ऊर्जा पर एक संयुक्त कार्य समूह का गठन

दोनों पक्षों ने सहयोग बढ़ाने और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा पर एक संयुक्त कार्य समूह का गठन किया है। यह समूह ग्रीन हाइड्रोजन, जैव ऊर्जा, जैव-रसायन, सर्कुलर फीडस्टॉक, नवीकरणीय ऊर्जा और बैटरी स्टोरेज पर ध्यान केंद्रित करेगा। इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच औद्योगिक साझेदारी और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है। यह रोजगार और अनुसंधान के अवसर पैदा करने के साथ-साथ भारत के स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन को भी सहायता प्रदान करेगा।

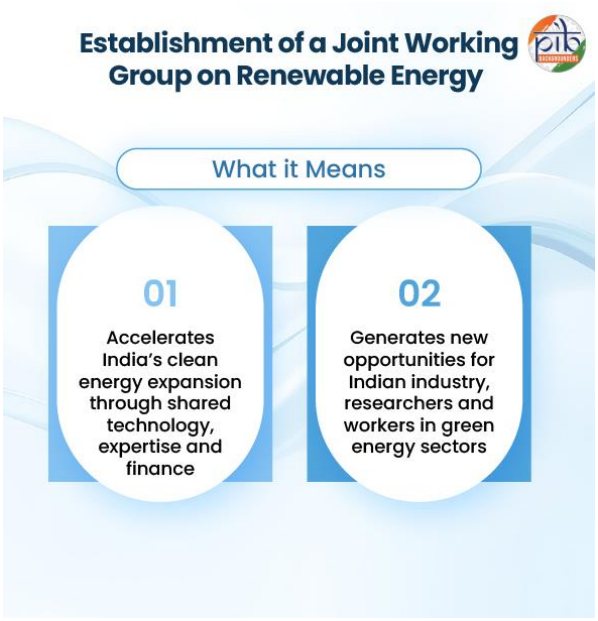

परिणाम 9: नीति आयोग और नीदरलैंड के बीच ऊर्जा परिवर्तन के लिए क्षमता निर्माण पर संयुक्त आशय वक्तव्य का नवीनीकरण

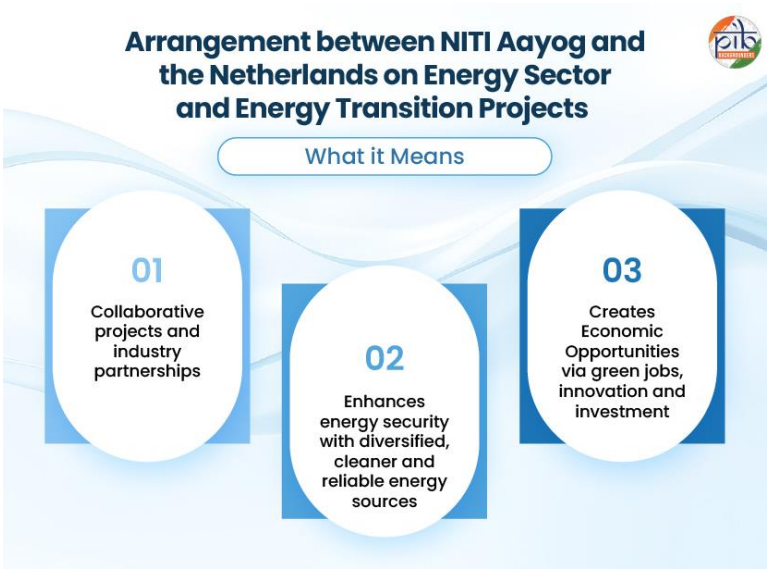

सतत ऊर्जा परिवर्तन के क्षेत्र में ये परियोजनाएं और साझेदारियां ऊर्जा सुरक्षा और स्वच्छ ऊर्जा के विकास में सहयोग को मजबूत करेंगी। ये गहरे सहयोग और ज्ञान साझा करने के लिए नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के अग्रजों और तकनीकी विशेषज्ञों को एक साथ लाएंगे। इन पहलों से हितधारकों के बीच समन्वय में सुधार होने और पूरे क्षेत्र में तकनीकी सहयोग को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। ये रोजगार के नए अवसर भी पैदा करेंगी और दीर्घकालिक सतत विकास में योगदान देंगी।

परिणाम 10: पश्चिम त्रिपुरा में फूलों के लिए भारत-डच उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना

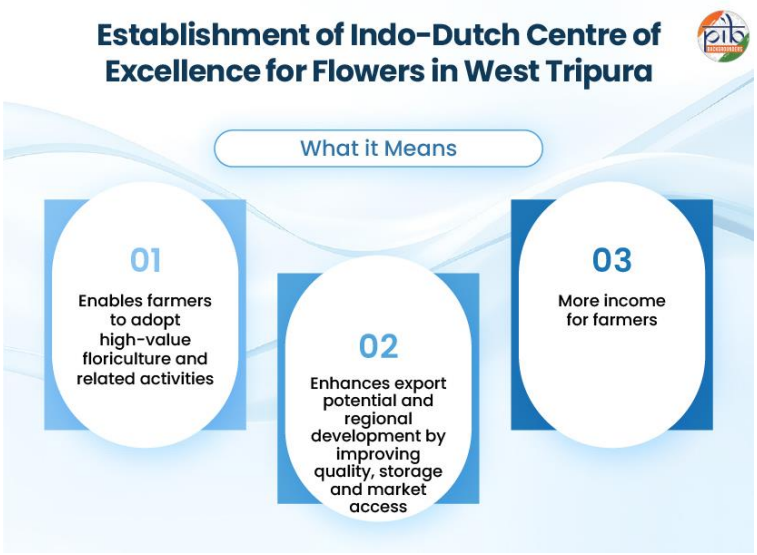

उत्कृष्टता केंद्र को विकसित करने की यह पहल त्रिपुरा में फूलों की खेती को बढ़ावा देगी और क्षेत्रीय विकास को गति देगी। इससे किसानों की आय में वृद्धि होगी और रोजगार के नए अवसर

पैदा होंगे। यह विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका में सुधार करेगा। कुल मिलाकर, यह लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाएगा।

परिणाम 11: पशुपालन उत्कृष्टता केंद्र, बेंगलुरु में डेयरी प्रशिक्षण के लिए भारत-डच उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना

बेंगलुरु के पशुपालन उत्कृष्टता केंद्र (सीईएएच) में एक 'भारत-डच डेयरी प्रशिक्षण उत्कृष्टता केंद्र' स्थापित किया जाएगा। यह भारत और नीदरलैंड के बीच डेयरी, संबद्ध कृषि और खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करेगा। इस क्षेत्र में प्रशिक्षण और ज्ञान साझा करने से उत्पादकता, गुणवत्ता और कौशल में सुधार होगा। यह रोजगार के अवसर भी पैदा करेगा और पशुपालन को सुदृढ़ बनाएगा।

परिणाम 12: पशुपालन और डेयरी क्षेत्र में सहयोग

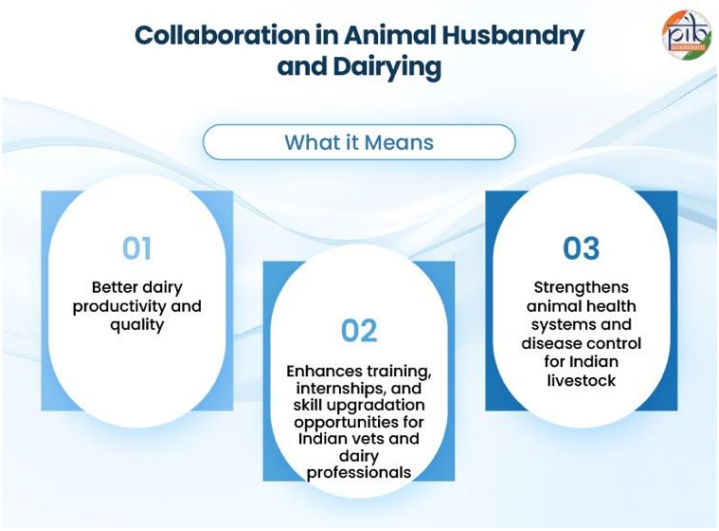

यह सहयोग बाजार पहुंच, जलवायु-अनुकूल खेती और खाद्य सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने के साथ कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में भारत-नीदरलैंड सहयोग को मजबूत करेगा। यह पूरे क्षेत्र में ज्ञान साझा करने, तकनीकी सहयोग और सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देगा। इस साझेदारी से कृषि उत्पादकता में सुधार होने, पशुधन के स्वास्थ्य और रोग प्रबंधन को मजबूती मिलने और आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता बढ़ने की उम्मीद है। यह ग्रामीण आजीविका को भी सहायता प्रदान करेगा, रोजगार के अवसर पैदा करेगा और दीर्घकालिक कृषि स्थिरता में योगदान देगा।

परिणाम 13: स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग के लिए व्यवस्था

स्वास्थ्य क्षेत्र में यह सहयोग अनुसंधान, सहभागिता और ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य जोखिमों से निपटने के लिए भारत-नीदरलैंड सहयोग को और मजबूत करेगा। यह संक्रामक रोगों, रोगाणुरोधी प्रतिरोध, गैर-संचारी रोगों, डिजिटल स्वास्थ्य और जलवायु-स्वास्थ्य के बीच के संबंधों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसे 'डच नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पब्लिक हेल्थ एंड द एनवायरनमेंट' (आरआईवीएम) और 'भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद' (आईसीएमआर) के बीच सहयोग से और अधिक समर्थन प्राप्त है।

परिणाम 14: सीमा शुल्क पारस्परिक प्रशासनिक सहायता समझौता

सीमा शुल्क अधिकारियों के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए 'सीमा शुल्क मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहायता समझौता' किया गया है। यह प्रवर्तन में सुधार करने और भारत व नीदरलैंड के बीच वैध व्यापार को सुगम बनाने के लिए सूचनाओं को साझा करने में सक्षम बनाएगा। यह समझौता पारदर्शिता और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करते हुए, लागत और देरी को कम करके व्यापार को अधिक कुशल बनाएगा।

परिणाम 15: उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग

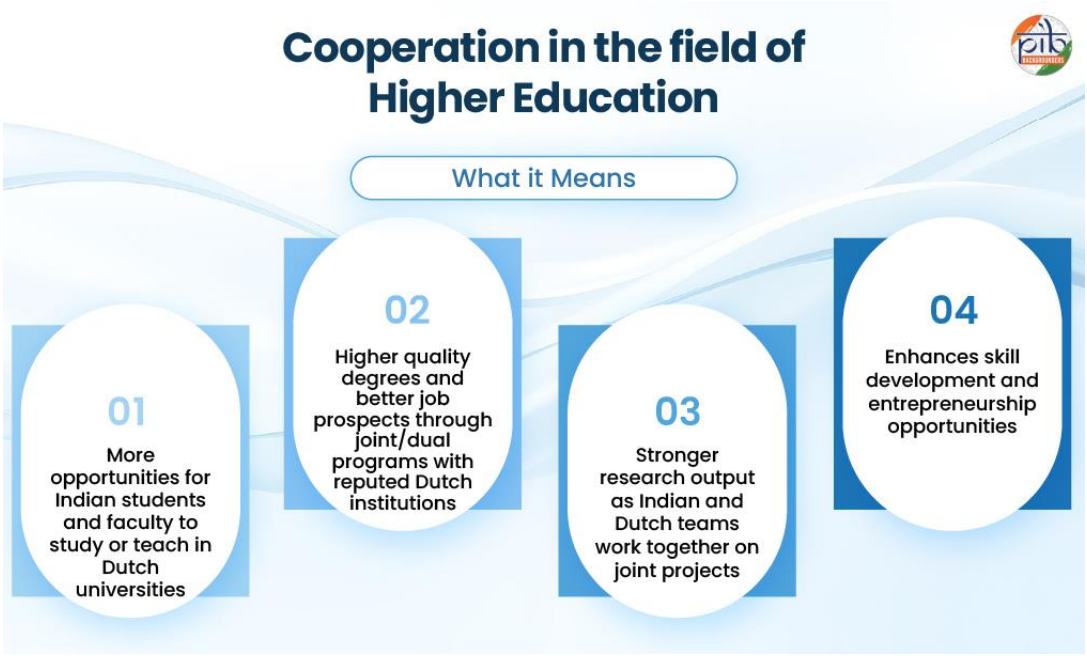

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह द्विपक्षीय सहयोग शिक्षकों और छात्रों की आवाजाही को बढ़ाएगा और सहयोगात्मक अनुसंधान को मजबूत करेगा। यह कौशल, रोजगार क्षमता व अनुसंधान आउटपुट में सुधार करेगा और रोजगार के नए अवसरों के साथ-साथ उद्यमशीलता के अवसरों को भी पैदा करेगा।

परिणाम 16: नालंदा विश्वविद्यालय और ग्रोनिंगन विश्वविद्यालय, नीदरलैंड के बीच सहयोग

नालंदा विश्वविद्यालय और ग्रोनिंगन विश्वविद्यालय के बीच यह सहयोग भारत और नीदरलैंड के बीच शैक्षणिक और संस्थागत सहयोग को गहरा करेगा। यह संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों, विनिमय कार्यक्रमों और सहयोगात्मक पाठ्यक्रमों के माध्यम से छात्रों और संकाय को बेहतर वैश्विक अनुभव प्रदान करेगा। यह साझेदारी अध्ययन के उभरते क्षेत्रों में अंतः विषय अनुसंधान, शिक्षण सहयोग और ज्ञान साझा करने के अवसर भी पैदा करेगी। इसके अलावा, इससे अंतर्राष्ट्रीय फंडिंग के अवसरों तक पहुंच आसान होने, नवाचार इकोसिस्टम को

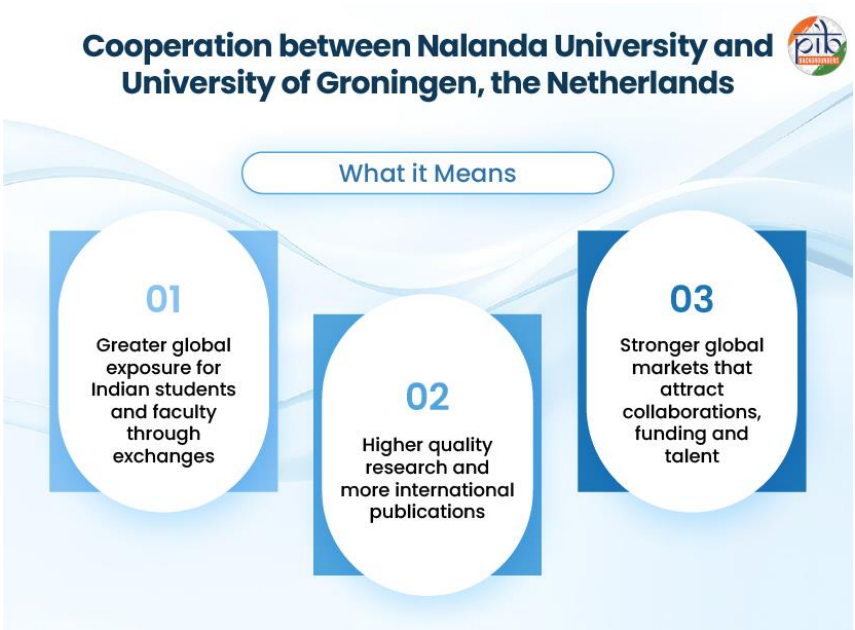

मजबूती मिलने और उच्च शिक्षा में प्रतिभा विकास व क्षमता विकास को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

परिणाम 17: लीडन विश्वविद्यालय पुस्तकालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के बीच सहयोग

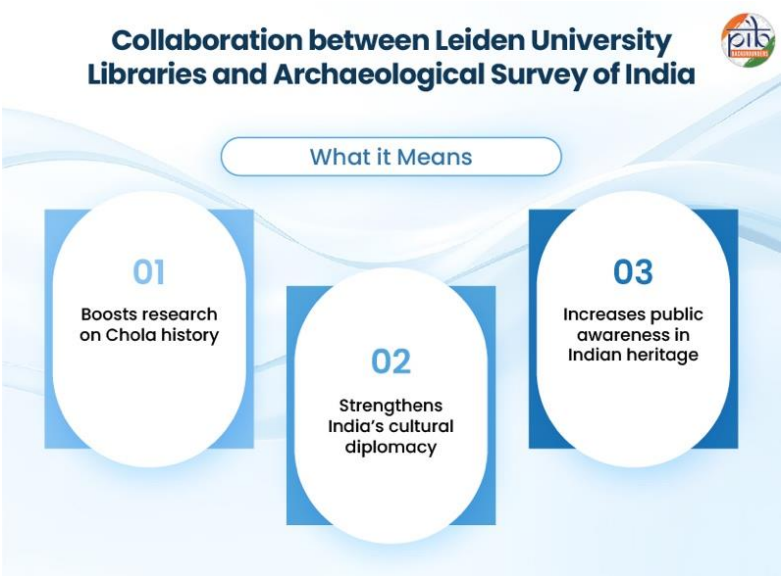

लीडेन विश्वविद्यालय पुस्तकालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के बीच यह सहयोग ऐतिहासिक अनुसंधान, अभिलेखीय संरक्षण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करेगा। यह पहल चोल काल पर संयुक्त अनुसंधान के नए अवसर पैदा करेगी, शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देगी और मूल्यवान ऐतिहासिक रिकॉर्ड व पांडुलिपियों तक पहुंच में सुधार करेगी। यह सांस्कृतिक कूटनीति को भी गहरा करेगा और भारत की समृद्ध सभ्यता व पुरातात्विक विरासत के प्रति वैश्विक जागरूकता को बढ़ाएगा।

कुल मिलाकर, ये परिणाम पारंपरिक सहयोग से भविष्योन्मुखी रणनीतिक साझेदारी की ओर एक बदलाव को दर्शाते हैं। ये मजबूत विकास, तकनीकी प्रगति और वैश्विक चुनौतियों पर मजबूत समन्वय के प्रति एक साझा दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं। भारत-नीदरलैंड की यह बढ़ती साझेदारी नवाचार-प्रेरित अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का एक प्रमुख स्तंभ बनने के लिए पूरी तरह तैयार है।

भविष्य के लिए तैयार भारत-नीदरलैंड साझेदारी की ओर

भारत और नीदरलैंड लगातार अपनी साझेदारी का विस्तार एक व्यापक और भविष्योन्मुखी सहयोग के रूप में कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी, स्वच्छ ऊर्जा, सेमीकंडक्टर्स, जल प्रबंधन, नवाचार और व्यापार में मजबूत पारस्परिक तालमेल गहरे जुड़ाव के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती हैं। संबंधों का रणनीतिक साझेदारी के स्तर पर पहुंचना बढ़ते आपसी विश्वास और साझा वैश्विक प्राथमिकताओं को दर्शाता है। जैसे-जैसे दोनों देश आर्थिक, तकनीकी और लोगों के बीच आपसी संपर्कों को मजबूत कर रहे हैं, यह साझेदारी सतत विकास, मजबूत आपूर्ति श्रृंखलाओं और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में सार्थक योगदान देने के लिए पूरी तरह तैयार है।

संदर्भ:

1. **विदेश मंत्रालय**
   - https://www.mea.gov.in/media-briefings.htm?dtl/41140/Transcript_of_Special_Briefing_by_MEA_on_the_Prime_Ministers_visit_to_UAE_Netherlands_Sweden_Norway_and_Italy_May_13_2026

- https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/41126/Visit_of_Prime_Minister_to_UAE_Netherlands_Sweden_Norway_and_Italy_May_15__20_2026
- Brief on India-Netherlands Bilateral Trade & Investment - News | Embassy of India, The Hague, The Netherlands
- https://www.indianembassynetherlands.gov.in/page/indian-community-in-netherlands/
- https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/41155/Prime_Minister_calls_on_Their_Majesties_King_WillemAlexander_and_Queen_M225xima_of_the_Netherlands_May_16_2026

- https://www.mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/41161

2. **पत्र सूचना कार्यालय**
   - https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2261884&reg=3&lang=1

3. **भारत में नीदरलैंड का दूतावास**
   - https://www.netherlandsandyou.nl/web/india/w/the-netherlands-and-india-work-together-to-boost-the-semiconductor-industry
   - https://www.netherlandsandyou.nl/web/india/themes/climate-energy

पीआईबी रिसर्च

****

पीके/केसी/डीवी